तकनीक के सहयोग से साड़ी उद्योग को बना दिया ग्लोबल ब्रांड

उद्योग जगत
सफलता के सोपान

जागरण संवाददाता, वाराणसी : तमाम ऐसी महिलाएं हैं जो नौकरी या व्यवसाय के साथ ही घरेलू काम व परिवार की जिम्मेदारियों को भी बखूबी निभा रही हैं। रिंकी अग्रवाल जैसी उद्यमी भी एक प्रेरणा हैं, जो न केवल अपने व्यवसाय को ऊंचाइयों तक ले जा रही हैं, बल्कि अपने परिवार की जिम्मेदारियों को भी उतनी ही कुशलता से निभा रही हैं। व्यवसाय में कई चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, उन्होंने तकनीक और नवाचार के माध्यम से अपने पारिवारिक व्यवसाय को एक प्रतिष्ठित ब्रांड में बदल दिया। शादी के दो साल बाद ही उन्होंने पारंपरिक कारोबार को नया रूप देकर उसे वैश्विक पहचान दिलाई। पिछले 15 वर्षों में जिस तरह रिंकी ने चंबल की उथल-पुथल भरी धारा से निकलकर गंगा की स्थिर और पवित्र प्रवाह में अपने जीवन को संवार लिया है, वे व्यवसायिक सफलता और पारिवारिक उत्तरदायित्वों के एक अद्भुत संगम की प्रतीक हैं।

मध्य प्रदेश के छोटे शहर भिंड में पलीं-बढ़ीं 39 वर्षीय रिंकी ने स्कूली शिक्षा के बाद इंदौर से इंटरनेशनल मार्केटिंग में एमबीए किया। 2010 में एमबीए पूरा करने के बाद उनकी शादी वाराणसी के उमंग अग्रवाल से हुई। उस समय रिंकी मात्र 24 वर्ष की थीं। विवाह के बाद उन्होंने अपने ससुर श्याम कृष्ण अग्रवाल से बनारसी साड़ी व्यवसाय को बारीकी से समझना शुरू किया और धीरे-धीरे इसमें रुचि भी बढ़ने लगी। हालांकि, उस समय बनारसी साड़ी का होलसेल व्यापार कुछ चुनौतियों से जूझ रहा था। रिंकी ने व्यवसाय का स्वाट (एसडब्ल्यूओटी) विश्लेषण किया, जिससे स्पष्ट हुआ कि बनारसी हथकरघा कारीगरी उनकी सबसे बड़ी ताकत है, लेकिन नवाचार की कमी उनकी कमजोरी। वहीं, पावरलूम उद्योग उनके लिए एक चुनौती बन रहा था, जबकि बनारसी कारीगरी को साड़ियों के अलावा स्कार्फ, शाल व अन्य उत्पादों में बदलाव कर ई-कामर्स के माध्यम से वैश्विक बाजार तक पहुंचाना एक बड़ा अवसर था।

इसी दृष्टिकोण के साथ, रिंकी ने अपने पति उमंग के साथ मिलकर 2012 में ब्रांड की स्थापना की। उन्होंने एक आनलाइन स्टोर भी शुरू किया, जिससे बनारसी साड़ियों को देश-विदेश के ग्राहकों तक पहुंचाया जा सके। इस पहल के तहत, उन्होंने पारंपरिक डिजाइनों को आधुनिक स्पर्श देना शुरू किया और अपने स्टूडियो के भीतर ही आठ पारंपरिक हथकरघों को स्थापित किया, जहां नए जीवन का जीवंत स्वरूप दिया जाता है। रिंकी का मानना है कि जब किसी नए डिजाइन की पहली साड़ी आपके सामने इन हथकरघों से कट के निकलती है, आज उनके स्टूडियो में देश-विदेश से लोग आकर बनारसी हथकरघा कारीगरी को समझने और सराहने आते हैं।

हैंडलूम पर साड़ी तैयार करता बुनकर ● जागरण

थकान महसूस नहीं होती

रिंकी का कहना है कि जब आप अपने काम को आनंद से करते हैं, तो थकान महसूस नहीं होती। हर दिन एक नया उत्साह लेकर आता है, जो आपको सुबह पांच बजे उठने के लिए प्रेरित करता है। रिंकी बताती हैं जापान में इसे 'इकीगई' कहा जाता है, फ्रांस में रेज़ों-डेट्रा, जबकि भारत में हम इसे 'कर्म ही पूजा है' की भावना से जोड़ते हैं। उनके अनुसार, कोई भी व्यवसाय कितना भी बड़ा क्यों न हो, परिवार की प्राथमिकता को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए।

रिंकी अग्रवाल।

****